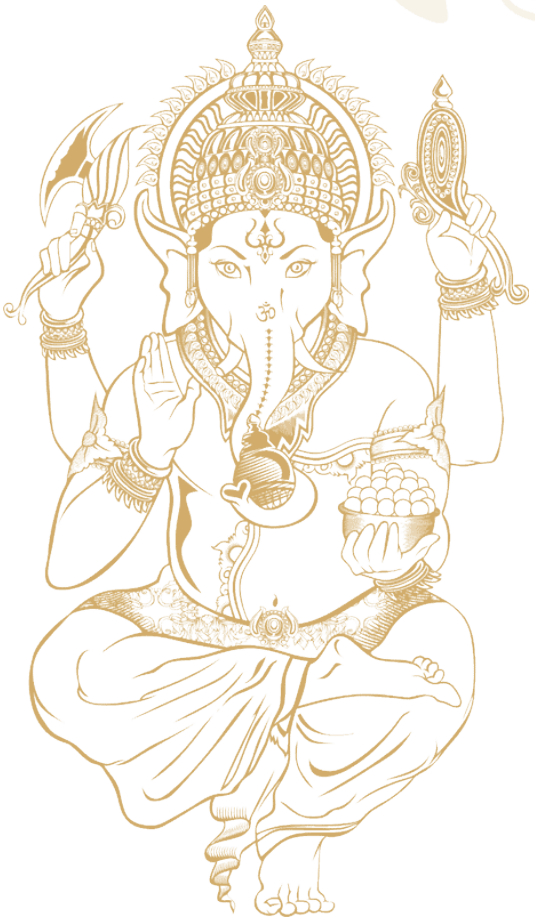

Mr.

31 Mar 2026

07:00 PM

Delhi

Model: Web-Pitridosh-Report

Order No: 121778201

तिथि 31/03/2026 **समय** 19:00:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:32
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	07:14:37 घं
वेलान्तर	00:04:12 घं
सूर्योदय	06:12:50 घं
सूर्यास्त	18:38:20 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	चैत्र
पक्ष	शुक्ल
तिथि	14
नक्षत्र	उ.फ़ाल्गुनी
योग	वृद्धि
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	श्वान
युंजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	टे-टेकचंद
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	शनि
चौघड़ियां	काल

विंशोत्तरी
सूर्य 5वर्ष 1मा 11दि
सूर्य
31/03/2026
13/05/2031

	00/00/0000
	31/03/2026
मंगल	06/07/2026
राहु	31/05/2027
गुरु	18/03/2028
शनि	28/02/2029
बुध	04/01/2030
केतु	12/05/2030
शुक्र	13/05/2031

योगिनी
सिद्धा 5वर्ष 11मा 18दि
सिद्धा
31/03/2026
19/03/2032

सिद्धा	29/07/2026
संकटा	17/02/2028
मंगला	29/04/2028
पिंगला	18/09/2028
धान्या	19/04/2029
भ्रामरी	28/01/2030
भद्रिका	18/01/2031
उल्का	19/03/2032

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं-	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			22:10:43	कन्या	हस्त	4	चन्द्र	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			16:37:08	मीन	उ.भाद्रपद	4	शनि	गुरु	मित्र राशि	1.57	पुत्र	पितृ	साधक
चन्द्र			28:38:00	सिंह	उ.फ़ाल्गुनी	1	सूर्य	मंगल	मित्र राशि	1.22	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	28:33:01	कुंभ	पू.भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	1.24	अमात्य	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध			19:06:27	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	चन्द्र	सम राशि	0.92	मातृ	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			21:31:38	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.28	भ्रातृ	धन	प्रत्यारि
शुक्र			06:52:39	मेष	अश्विनी	3	केतु	राहु	सम राशि	1.43	कलत्र	कलत्र	मित्र
शनि		अ	11:16:04	मीन	उ.भाद्रपद	3	शनि	चन्द्र	सम राशि	1.31	ज्ञाति	आयु	साधक
राहु	व		14:33:21	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		14:33:21	सिंह	पू.फ़ाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

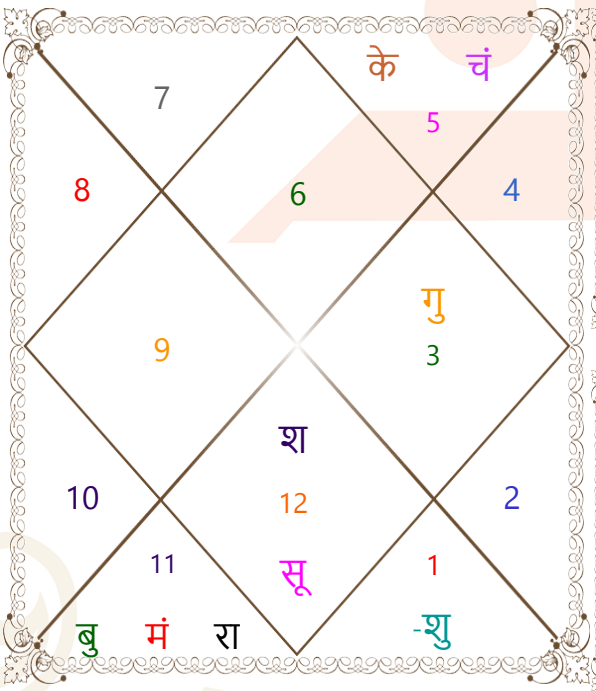

चन्द्र कुंडली

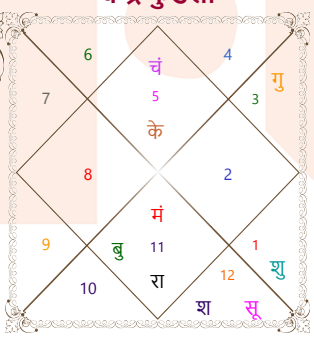

नवमांश कुंडली

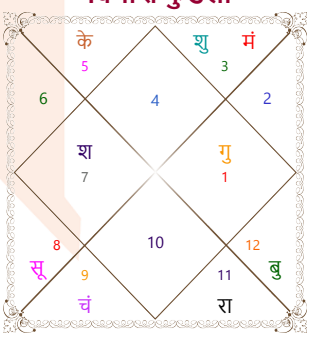

सर्वाष्टकवर्ग

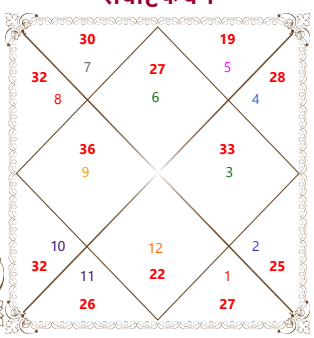

दशमांश कुंडली

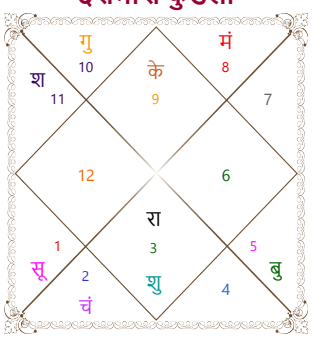

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुंमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दु:खी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा शापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1- परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2- आनुवंशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3- परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4- परिवार में बच्चों द्वारा अपमान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5- गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6- परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7- परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फ़साद होना।
8- कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।

9- बुरी आदतों की लत लग जाना।
10- परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11- शिक्षा में बाधाएं आना।
12- स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13- माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14- परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15- परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1- श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2- रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3- यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1- श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र-दक्षिणा आदि दें।
2- यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3- प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर क्षीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5- पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6- रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7- लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8- हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9- गया या त्र्यम्बकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10- नारायणबलि पूजा करवाएं।
11- पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

12- पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13- श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1- पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2- पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3- पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4- पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5- पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6- बुजुर्गों का सम्मान करें।
7- पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8- घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9- पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है, अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किए गए पापकर्म आपके पितृदोष का कारण हैं। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजरे से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है, परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षणों में से किसी प्रकार के कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है, तो आपको

पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभ कार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यम्बकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।